



# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

2018

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |                 |                             |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------|-----------------------------|
| परीक्षा का विषय<br>हिन्दी                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | विषय कोड<br>001 | परीक्षा का माध्यम<br>हिन्दी |
| <p>स्टी लाकर लगाएँ</p> <p>उत्तर पुस्तिका का<br/>सरल क्रमांक <b>A - 1088197</b></p> <p>अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर<br/> <div style="border: 1px solid black; padding: 2px;">             - 2 8 2 5 3 6 9 7 3           </div> </p> <p>शब्दों में<br/> <div style="border: 1px solid black; padding: 2px;">             - दो आठ दो पाँच तीन छः नौ सप्त तीन           </div> </p> |                 |                             |

उदाहरणार्थ

|    |    |    |     |     |    |      |    |    |
|----|----|----|-----|-----|----|------|----|----|
| 1  | 1  | 2  | 4   | 3   | 9  | 5    | 6  | 8  |
| एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पाँच | छः | आठ |

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं परीक्षक द्वारा भरा जावे

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में **1** शब्दों में **एक**

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक **09**

ग :- परीक्षा का दिनांक **1 03 18**

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

**HSSC**

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर : केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

**शील जैन**

**23**

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई हो। क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएँ।

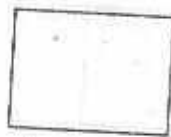
उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा : परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

**de/mul**

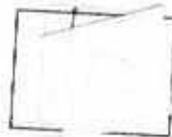
| केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।<br>प्रश्न क्रमांक के समुख प्राप्तियों की प्रविष्टि करें। |               |            |
|----------------------------------------------------------------------------------------|---------------|------------|
| प्रश्न क्रमांक                                                                         | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक |
| 1                                                                                      |               |            |
| 2                                                                                      |               |            |
| 3                                                                                      |               |            |
| 4                                                                                      |               |            |
| 5                                                                                      |               |            |
| 6                                                                                      |               |            |
| 7                                                                                      |               |            |
| 8                                                                                      |               |            |
| 9                                                                                      |               |            |
| 10                                                                                     |               |            |
| 11                                                                                     |               |            |
| 12                                                                                     |               |            |
| 13                                                                                     |               |            |
| 14                                                                                     |               |            |
| 15                                                                                     |               |            |
| 16                                                                                     |               |            |
| 17                                                                                     |               |            |
| 18                                                                                     |               |            |
| 19                                                                                     |               |            |
| 20                                                                                     |               |            |
| 21                                                                                     |               |            |
| 22                                                                                     |               |            |
| 23                                                                                     |               |            |
| 24                                                                                     |               |            |
| 25                                                                                     |               |            |
| 26                                                                                     |               |            |
| 27                                                                                     |               |            |
| 28                                                                                     |               |            |

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99 1x33.9mmx16

3



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न - (1) का उत्तर

(1) कृष्ण को लेने

(2) भय में

(3) लालमणि

(4) पंन

B (5) 31

S

E

प्रश्न - (2) का उत्तर

(अ) धरती

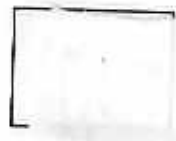
(ब) क्षणभंगुर

(स) अरे बबे

(द) मातृभाषा

(इ) प्रबन्ध काव्य

4



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न - (3) का उत्तर

(1) असत्य

(2) असत्य

(3) सत्य

(4) सत्य

(5) सत्य

B  
S  
E

प्रश्न - (4) का उत्तर

(अ) राजमुरव का मुरव (दस मुरव) रावण देखता है।

(ब) रामनारायण उपाध्याय को लिखने के लिए प्रकान्त चाहिए।

(स) डॉ. रामकुमार वर्मा की माताजी का नाम राजरानी देवी था।

(द) रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं।

(इ) रोला और उल्लाहा के संयोग से हापस दंड बनता है।

5



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 5 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(5) का उत्तर

स्तम्भ "क"

स्तम्भ "ख" (उत्तर)

(1) मीरा के आराध्य

श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण

(2) वापसी

उषा प्रियंवदा

(3) कंस आतंकित था

देवकी का व्योमालीन रूप

(4) गीत मुक्तक

मीरा पदावली

(5) माता - पिता

द्वन्द्व समास

B  
S  
E

प्रश्न-(6) का उत्तर

नाव में पानी भर जाने पर सयानों का कर्तव्य है कि दोनों हाथों से पानी को निकाल कर नाव को डूबने से बचाए।

प्रश्न-(7) का उत्तर

'पल्लव वसना' उस सुखी सी डाल को कहते हैं वसन्त के आने ही वस्त्रधारिणी बनेगी। तथा जिसने गैल पुत्री के समान चलने रवाना भी हो दिया है तथा वसन्त के आगमन पर ही पल्लवों रूपी वस्त्र



6

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{\phantom{00}} = \boxed{\phantom{00}}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 6 के अंक

दृष्टा



प्रश्न क्र.

धारणा करेगी।

प्रश्न - (8) का उत्तर

'अरी सुहागिन' सम्बोधन विवाहित स्त्री के लिए किया गया है लेकिन संकेत पृथ्वी की ओर किया गया है।

प्रश्न - (9) का उत्तर (अथवा)

कृष्ण ने दही का दोना अपनी चोरी को दिपाने के लिए पीठ के पीछे दिया लिया था।

प्रश्न - (10) का उत्तर (अथवा)

जब नवयुवक सहमकर साहस व विश्वास के साथ अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो बिछन, विघ्न बाधाएं उसका मार्ग दोड़ देती हैं।

प्रश्न - (11) का उत्तर (अथवा)

घर रकुलने ही लेखक को लगने लगा जैसा ताले के साथ उसकी यादें रकुलती जा रही थीं। जो उसके बचपन की थी।

7

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{\phantom{00}} = \boxed{\phantom{00}}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 7 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(12) का उत्तर (अथवा)

गुलावर बाबू रेलवे की नौकरी से  
पैंतीस वर्ष बाद रिटायर हुए थे।

प्रश्न-(13) का उत्तर

शरज जोशी जी के अनुसार अच्छे अध्ययन की  
कोई दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

- (1) अध्ययन गम्भीर किस्म का प्रानी होता है या  
उसमें उसमें यह भ्रम बनाये रहने की  
समता होती है कि वह गम्भीर है।
- (2) अध्ययन महोदय सभा में हमेशा लैट आता  
है क्योंकि वह अपना अतिव्यस्त समय  
बताना चाहता है।

प्रश्न-(14) का उत्तर

उत्तरारवण्ड का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही  
अनूठा है। यहाँ कि स्वच्छ जल समूह  
कल-कल करती नदियाँ नदियाँ, वर्ष भर  
बर्फ से आच्छादित रहने वाली पर्वत  
(चोटीयाँ) पहाड़ियाँ, हरे भरे वायव्य वन  
स्वच्छ व शान्त वातावरण आदि के  
प्राकृतिक दृश्य दृश्य आह्लादों को  
आकर्षित करते हैं।

8

2

+

3

=

5

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 8 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(15) का उत्तर

वाक्य शुद्ध

- (i) उसने मुझे कुछ नहीं कहा।
- (ii) अवधीय आपका

प्रश्न-(16) का उत्तर (अथवा)

B  
S  
E

काव्य की परिभाषा

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार

"रसालोक के वाक्यम् काव्यम्" अर्थात्

रस युक्त के वाक्य ही काव्य हैं।  
कहे जाते हैं। काव्य के मुख्य रूप  
मुख्य रूप से दो भेद होते हैं-

- (1) दृश्य काव्य (देखने योग्य)
- (2) श्रव्य काव्य (सुनने योग्य)



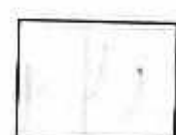
9



+



=



य ९ पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न - (17) का उत्तर (अथवा)

गणेशशंकर विद्यार्थीजी नाटे कद कारी के होते हुए भी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।

उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार हैं -

(1) साहित्यकार - यद्यपि गणेशशंकर विद्यार्थीजी का राजनीति की ओर अधिक रुझान था परन्तु उनका हृदय सरस साहित्यकार था। विद्यार्थीजी की विलक्षण प्रतिभा के कारण ही प्रताप शीघ्र ही भारत का एक पत्रिका बन गयी।

(2) समाजवाद - गणेशशंकर विद्यार्थीजी पर समाजवाद का भी गहरा प्रभाव था। इसी कारण उन्होंने औद्योगिक नगर कानपुर के मजदूर दल की ओर उन मजदूरों के अधिकारों को प्राप्त कराने के लिए उन्होंने स्वयं संघर्ष किया। तथा निरन्तर संघर्ष में रत रहे।

(3) राष्ट्रवाद - गणेशशंकर विद्यार्थीजी पर राष्ट्रवाद का गहरा प्रभाव था। इसी कारण वे देशभक्तों के लिए धन मांगकर व अपना पेट काटकर उन्होंने आर्थिक सहायता प्रदान करती थी। इसी प्रकार उन्हीं दिनों प्रताप में





प्रश्न क्र.

देशभक्ति विषयक लघु व दाय कविताएँ प्रकाशित होती थी।

प्रश्न-(18) का उत्तर (अथवा)

राजभाषा - जिस प्रकार राष्ट्र भाषा देश के अन्य भाषा विभाषी राज्यों अर्थात् अन्य भाषा बोलने वालों के बीच सेतु का काम करती है। उसी प्रकार राजभाषा किसी राज्य के व्यक्तियों के बीच अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सहायक होती है (यहाँ राज्य से तात्पर्य है कि जिस राज्य में जो राजभाषा होती है वह वहाँ के व्यक्तियों के मध्य सम्पर्क करने में सहायक होती है) राजभाषा में ही उस राज्य के सारे सरकारी कार्य किये जाते हैं।

राजभाषा की प्रमुख कोई तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

- (1) राजभाषा राज्य के व्यक्तियों के भावों के आदान-प्रदान करवाने में सहायक होती है।
- (2) राजभाषा में ही राज्य के सभी सरकारी काम किये जाते हैं।

11

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ



प्रश्न क्र.

(3) किसी भाषा को राजभाषा बनाने से उसका महत्व बढ़ जाता है। सरकारी कर्मचारियों व राज्यवासियों के लिए राजभाषा का ज्ञान होना आवश्यक हो जाता है।  
उदाहरण - जैसे हूँ पंजाब राज्य की राजभाषा पंजाबी है महाराष्ट्र की मराठी भाषा है।

प्रश्न - (19) का उत्तर (अथवा)

यमक व श्लेष अंलकार में अंतर निम्नलिखित है -

| यमक                                                                              | श्लेष                                                                            |
|----------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------|
| 1) यमक अंलकार में शब्दों की आवृत्ति बार होने पर उनका अर्थ भिन्न-भिन्न निकलता है। | 1) श्लेष में एक ही शब्द का कई जगह अलग अर्थ निकलता है।                            |
| 2) यमक अंलकार एक ही शब्द उत्पत्ति बार-बार तथा उसका अर्थ अलग अलग पाया जाता है।    | 2) श्लेष में शब्दों में एक ही शब्द भिन्न-भिन्न स्थानों भिन्न-भिन्न अर्थ देता है। |
| 3) उदा० - "कनक-कनक ते सौ गुनी मादकत अधिकाय या पाये वौराय जग पाये वौराय"।         | 3) उदा० - "रहिमन पानी राखिये विन पानी सब मून पानी गये न ऊभरे मोती मानुष चुन"।    |



प्रश्न क्र.

प्रश्न - (20) का उत्तर

रिपोर्टाज - रिपोर्टाज से आशय है कि छात्रों का पूर्णतया सच्चाई के साथ वही सहजता, रोचकता व सजीवता के वर्णन करना ही रिपोर्टाज में कहलाता है। सीधे अर्थों में किसी औरों दे रही छात्रों का पूर्ण सच्चाई के साथ सजीवता व सरलता से वर्णन करना ही रिपोर्टाज कहलाती है।

B  
S  
E

रिपोर्टाज की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- (1) रिपोर्टाज में लेखक पूर्ण सच्चाई के साथ छात्रों का वर्णन करता है।
- (2) रिपोर्टाज गांधी की सबसे रोचक विधा है। छात्रों विशेष का औरों दे रहा वर्णन होता है।
- (3) रिपोर्टाज में (सरलता) सहजता व सम्पूर्ण निष्ठा के साथ लेखक छात्रों का सजीवता से वर्णन करता है।





=



पृष्ठ 13 के अंक

कुल अंक

MADHYA PRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION, BHOPAL

MADHYA PRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - (21) का उत्तर

प्रयोगवाद की कोई दो विशेषताएं लिखिए -

- (1) नवीन उपमानों - इस काल के कवियों ने का प्रयोग नए-नए उपमानों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। वे मानते थे कि काव्य के पुराने उपमान अब बर्बाद हो चुके हैं।

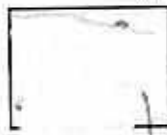
- (2) नारी के प्रति नवीन भावना -

इस काल के कवियों ने रीतिकालीन कवियों की तरह नारी को प्रेमप्रति का साधन न मानकर उसे सम्मानजनक स्थान दिया। इस काल के कवियों के अनुसार इस काल की नारी पार्थिव जगत की स्थूल नारी न होकर भाव जगत की सूक्ष्म नारी थी।

प्रयोगवाद के प्रमुख दो कवि लिखिए -

| कवि              | रचना                                              |
|------------------|---------------------------------------------------|
| (1) अज्ञेय       | (1) "हरी धारा पर क्षण भर"<br>(2) "इल्लम"          |
| (2) क. मुक्तिबोध | (1) "सैफ" का मुख लेखक<br>(1) "भूरी-भूरी रवाक धूल" |





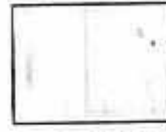
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 14 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(22) का उत्तर

कवि परिचय - "सूरदास"

(अ) रचनायें - (1) "सूरसागर"  
(2) "सूरसारावली"

(ब) भावपक्ष - आपके भावपक्ष की विशेषताएँ  
निम्नलिखित हैं -

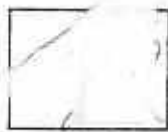
(1) भक्ति भावना - प्रभु श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन होकर आपने अपनी रचनाएँ की हैं। आपकी रचनाओं में प्रभु श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति भावना की सलक आपकी रचनाओं में मिलती है।

(2) रस सिद्धि - आपकी रचनाओं में गुंजार वात्सल्य, शान्त रसों का प्रयोग बड़ी सहजता से देखने को मिलता है। आपकी रचनाओं में रसों को भावों को व्यक्त करने के लिए समयानुसार प्रयोग किया गया है।

(3) प्रभु के प्रति सच्ची भावना - आपकी रचनाओं में प्रभु के प्रति सच्ची भावना के दर्शन होते हैं।

B  
S  
E

15



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 व. अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

कलापक्ष - आपके कलापक्ष की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

भाषा - आपकी भाषा ब्रजभाषा है आपने अपनी रचनाओं में ब्रजभाषा भाषा तथा कहीं राजस्थानी व अवधी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग अपनी में किया है। आपकी मुख्य रूप से भाषा ब्रजभाषा ही है।

शैली - आपकी शैली गोपयात्मक पद शैली है।

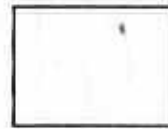
अंलकार प्रधान - आपकी रचनाओं में अंलकारों की उत्पत्ति रसिकता स्वयं ही हुई है। आपकी रचनाओं में पुनरुक्ति - प्रकाश अंलकार, रूपक अंलकार, उपमा अंलकारों का भी प्रयोग किया आपकी रचनाओं में किया गया है।

द्वन्द्व प्रधान - आपकी रचनाओं में निर्ममता के साथ द्वन्द्वों का संगीतत्मकता के साथ प्रयोग किया गया है आपने वार्तिक व मात्रिक द्वन्द्वों का भी प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है।

साहित्य जगत में स्थान - प्रश्न की भावित में लीन होकर आपने अपनी रचनाएँ की हैं। आपके रसों के प्रयोग से चमत्कार पैदा होता है। रससिद्धि कवि के रूप में आप मर्द व स्मरणीय रहेंगे।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 16 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न - 23 का उत्तर (मध्या)

लेखक परिचय - उषा-प्रियंवदा

रीरचनाएँ - 1) "बापसी"  
2) "मिन्दगी और गुलाब"

B  
S  
E

विभाषा - आपकी भाषा शुद्ध साहित्यिक रवड़ी बोली है। आपने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी, मराठी, अंग्रेजी भाषा के शब्दों के प्रयोग को करने के लिए आपने कभी भी हाथ पीढ़े नहीं किये हैं। आपकी भाषा नरम व लक्ष्मण प्रधान है। आपने भाषा में रोचकता व चमत्कार पैदा करने के सुहावने व लोक प्रचलित कहावतों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है।

शैली - आपकी भाषा शैली निम्नलिखित प्रकार की है -

1) भावात्मिक शैली - इस शैली का प्रयोग आपने भाव प्रधान रचनाओं में किया है। जिससे भावों में सरलता आई है।

(2) वर्णात्मिक शैली - इस शैली का प्रयोग आपने निबन्धों, कहानीयों



17

+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 17 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

तथा कठिन विषयों का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया है।

(3) चित्रात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग कर आपने शब्दों को चित्रात्मक रूप प्रदान किया है।

(4) व्यंग्यात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग कर आपने सामाजिक समस्याओं पर केंद्रे व्यंग्य किये हैं।

(स) साहित्य जगत में स्थान - साहित्य में रचन करके आपने अपनी रचनाएं लिखीं। पारिवारिक समस्याओं में तो आपको महारत प्राप्त थी। एक कुशल लेखिका के रूप में आप सदैव हिन्दी जगत में जगमगाती रहेगी।

प्रश्न-(24) का उत्तर

संकेत - "भय" किसी आती भय कहते हैं।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गाथांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के अन्तर्गत "भय" नामक पाठ से अवतरित किया गया है जिसके लेखक "आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी" हैं।



प्रश्न क्र.

प्रसंगा - प्रस्तुत पद्यांश में भय की परिभाषित व भय का विश्लेषण किया गया है।

व्याख्या - लेखक आचार्य चन्द्र रामचन्द्र शुक्लजी के अनुसार जब किसी आती हुई विपत्ति या दुःख के कारण जो आवेगपूर्ण स्तब्ध मनोविकार या खले गति से आते हुए मनोविकार को भय कहा जाता है। भय में विपत्ति से दूर जाने की आशा होती है। भय में सदैव डर बना रहता है।

विशेष - (1) भय का मनोविश्लेषण किया गया है।  
(2) भाषा सरल व प्रवाह युक्त है।  
(3) भय के कारण हुए होने वाले दुःख का भी वर्णन है।

प्रश्न - (25) का उत्तर (अथवा)

संकेत - "कबीर संगत" - चन्दन होय।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के अन्तर्गत "अमृत वाणी" नामक कविता से अवतरित किया गया।



हैं जिसके ल कवि "कबीरदास जी" हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियों में कबीरजी ने संगति के प्रभाव को बताया है।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि संगत मनुष्य पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है जिस प्रकार संत या सज्जनों की संगत करने से वर्तमान व भविष्य दोनों भवसागर पार हो जाते हैं। जिसने साधु की संगति के महत्व को समझ लिया वह भवसागर से पार हो गया। जिस प्रकार चन्दन की सुगन्ध के कारण वन के सभी वृक्ष उसी की सुगन्ध में रंग जाते हैं, लेकिन कुसंगत व अपने स्वभाव को छोड़ने के कारण बाँस चन्दन की सुगन्ध को नहीं ग्रहण करता है व अपनी सुगन्ध को नहीं व्यापता है।

विशेष - (1) कबीरजी ने संगति के प्रभाव का बड़ा रोचक वर्णन किया है।

(2) बाँस का उदाहरण देकर समझने में और सरलता आ गयी है।

(3) भाषा सधुसकड़ी है।





प्रश्न क्र.

प्रश्न - (26) का उत्तर

(क) शीर्षक - " सामाजिक प्राणी" ।

(ख) समाज से अलग मनुष्य की के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है ।

(ग) मित्र एक ऐसा सरवा होता है जो गुरु, माता के स्थान की प्रति करता है ।

B  
S  
E

प्रश्न - (28) का उत्तर - (ब)

निबन्ध - " दीपावली "

बिन्दुरेख

- (1) प्रस्तावना
- (2) दीपावली मनाने का कारण
- (3) दीपावली का महत्व
- (4) मनाये जाने का तरीका
- (5) दीपावली का प्राचीन व नवीन रूप
- (6) दीपावली से लाभ व हानियाँ
- (7) उपसंहार

(21)



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(21) का उत्तर (अथवा)

सेवा में,  
जिलाधीश, गहोदय,  
जवाबियर (मं.प्र.),

विषय- हवनि विस्तारक यंत्र को बचाने पर प्रतिबन्ध  
हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,

हम प्रेम नगर क्षेत्र के इकट्ठा 12 वीं के छात्र  
हैं। कुछ दिनों बाद हमारी वार्षिक परीक्षाएँ  
प्रारम्भ होने वाली हैं। इसलिए हम अपनी  
पढ़ाई के ओर अधिक ~~मेहनत~~ मेहनत कर  
रहे हैं लेकिन लाऊड स्पीकरों, टी.वी व  
हवनि विस्तारक यंत्रों के कर्णभेदी स्वर  
के कारण हमारी पढ़ाई में व्यवधान  
उत्पन्न हो रहा है।

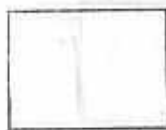
अतः आपसे अनुरोध कि हम सब छात्रों के  
आविष्य को देखकर परीक्षा तक हवनि विस्तारक  
यंत्रों पर रोक लगाने की कृपा करें।

धन्यवाद

दिनांक-10/11/18

सार्थी

अ. व. स



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

कुल अंक



CONDARYEDUG

प्रश्न क्र

प्रश्न-(28) का उत्तर

निबन्ध - "जल का महत्व"

विन्दुरेश्वर :-

(1) प्रस्तावना

(2) जल का मानव जीवन में महत्व

(3) जल का उपयोग

3.1) कृषि क्षेत्र में

3.2) उद्योग क्षेत्र में

3.3) सफाई में करने में

3.4) दैनिक उपयोग में

4) जल के प्रदूषण के कारण

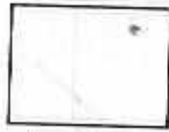
5) जल के प्रदूषण को रोकने के उपाय

6) जल के की सभी जगह में महत्व आवश्यकता

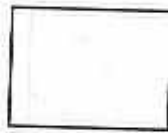
7) उपसंहार

B  
S  
E

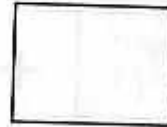




+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

॥ रहिमन पानी सारिवहे विन पानी सब सून,  
पानी गये न उबरे मोती मानुष चुनगी॥<sup>18</sup>

1) प्रस्तावना-

मानव व प्राणी तथा जीवजगत तथा वनों का आधार कृषि हो जल ही है। जल मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी है। जल मानव की आत्मा के समान ही है। जल का प्रदूषण आज-कल नगरीकरण व आधुनिकीकरण के कारण बड़े बड़ना जा रहा है। अतः हमें चाहिए कि हम जल को प्रदूषित होने से बचाये व अपने जीवन को सुरक्षित करें।

2) जल का मानव जीवन में महत्व - जैसा कि

ऊपर दिये हुए उक्ति से स्पष्ट होता है कि जल का मानव जीवन में बहुत अधिक है। मानव के शरीर में लगभग 70-72% पानी की मात्रा होती है। जिससे हम समझ सकते हैं कि जल का प्राणी मात्र अर्थात् मनुष्य के लिए कितना महत्व है।

24



MADHYA PRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

### (3) जल का उपयोग -

जल का मनुष्य के हर क्षेत्र में ही उपयोग किया जाता है जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

#### 3.1) कृषि क्षेत्र में -

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा यहाँ के लोगों के जीवन को पीजल का एक मात्र सहायक कृषि है। कृषि जल पर ही निर्भर है बिना जल के कृषि करना असंभव है। कृषि के द्वारा विश्व 17.84% जनसंख्या का भरण पोषण करता है।

#### 3.2) उद्योग क्षेत्र में -

जल का उद्योग क्षेत्र में भी बहुत महत्व है जैसे जल उद्योग रेशी को गलाने के लिए जल की आवश्यकता होती है तथा गन्ना उद्योग में गन्ने की प्राप्ति कृषि से होती है जो जल पर निर्भर है उद्योगों प्राप्त होने वाला कृषि पर निर्भर है और कृषि जल निर्भर है।



# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

2018

25

परीक्षा का विषय

हिन्दी

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

1 03 18

स्टीकर तौर के निशान

मिलाकर लगायें

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC

C.N.-252008

पर्यवेक्षक का नाम

श्रीव जैन

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

23

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

उत्तर पुस्तिका का  
संलग्न क्रमांक

C-

3244533

अंकों में

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

- 2 8 2 5 3 6 9 7 3

शब्दों में

दो आठ दो पचास तीन दस नौ सात

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक

तक कुल प्राप्तांक

+  =

इस प्रकार उपयोग व व्यापार व्यवस्था का आधार है।

B  
S  
E

3.3) साफ-सफाई के क्षेत्र - जल का उपयोग साफ-सफाई के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है जैसे घरों, उद्योगों की साफ-सफाई आदि में।

3.4) दैनिक उपयोग -

जल का दैनिक कार्यों में भी उपयोग किया जाता है जैसे बर्तन धोने में, कुपड़े धोने में बहाने में, आदि में जल का उपयोग किया जाता है।

पृष्ठ के अंकों का योग





## (4) जल के प्रदूषण के कारण

जल के प्रदूषण के कई कारण हैं जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

(1) उद्योगों व फर्मों द्वारा रासायनिक पदार्थों को नालाबों व नदियों में छोड़ देना।

(2) जानवरों को नालाबों व नदियों में बलाने से।

(3) जल में अपशिष्ट पदार्थ जैसे मल-मूत्र के त्यागने से।

(4) बेकार पड़े पदार्थों का जल में मिलाने जल प्रदूषण होता है।

## (5) जल प्रदूषण के उपाय

जल को प्रदूषण से बचाना ही जल संरक्षण कहलाता है जिसके उपाय निम्नलिखित हैं -

(1) उद्योगों व फर्मों के जल में रासायनिक पदार्थों के बहाने पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।



(2) उद्योगों में जानवरों को नहीं बहाना चाहिए।

(3) मूल-मूल व अपशिष्ट पदार्थों को जल में नहीं त्यागना चाहिए।

(4) सरकारी प्रयास किये जाने चाहिए।

(5) जमीन जल-जागरूकता को बढ़ाकर जल की आवश्यकता लोगों को बनाना चाहिए।

(6) जल की आवश्यकता

जल का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्व है क्योंकि बिना जल मानव की नित प्रतिदिन की क्रियाएँ अवरुद्ध हो जायेगी।

खाना बनाना, बहाना, वृद्धि के दैनिक कार्य सभी बंद हो जायेगे।

जिस प्रकार मानव के लिए आत्मा आवश्यक है वैसे ही मानव के जीवन में जल आवश्यक है।



## (7) उपसंहार-

जल मानव के हर क्षेत्र में उपयोगी है इसलिए संरक्षण किया जाना आवश्यक आज विश्व में विविध विकासशील देशों में प्रदूषण की सबसे ज्यादा समस्या है। जल प्रदूषण के कारण ही विकासशील देशों में 80% रोग पैदा हो रहे। अतः आवश्यक की ऐसी तकनीक विकसित की जाये जिससे समुद्र के जल को शुद्ध कर मानव के लिए उपयोगी बनाया जा सके।

अतः एक प्रसिद्ध है कि

"जल है तो कल है।"

"जल है तो जीवन है।"